ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 13, Issue 5, May 2023 Impact Factor 8.232 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

ममता कालिया के कथा साहित्य में पारिवारिक एवं सामाजिक सरोकार

डॉ. सरला पण्ड्या

हिन्दी विभाग

कार्यवाहक प्राचार्य,

हरिदेव जोशी राजकीय कन्या महाविद्यालय बाँसवाड़ा

ममता कालिया ने अपने कथा साहित्य में सामाजिक सरोकार के प्रत्येक पहलू को उद्घाटित किया है– अकेलापन, रिश्तों की टूटन, सामाजिक बाधाएँ, तलाक, दहेज, रिश्तों में

दरार, स्त्री की दयनीय स्थिति और अधिकारियों की स्त्री लंपटता, विधवा की दयनीय दशा, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, महँगाई, लिंगजन्य भेद, अस्पताल एवं शैक्षणिक वातावरण में व्याप्त भ्रष्टाचार आदि पर वह हमारा ध्यान खिंचतीं है। ममता कालिया ने अपनी कहानियों में सम्पुर्ण पारिवारिक एवं सामाजिक विसंगतियों को उजागर किया है। प्राचीन एवं वर्तमान भारतीय समाज में दहेज प्रथा आम बात रही है। खासकर इस प्रथा से नकारात्मक प्रभाव के कारण नई नवेली दुल्हन को कभी–कभी अपनी जान तक से हाथ धोना पड़ता रहा है। लेखिका ने इस समस्या पर भी प्रकाश न डालकर सिर्फ दहेज लेने तक का समर्थन किया है। 'बेघर' उपन्यास में परमजीत की जब शादी तय होने जा रही थी तो परमजीत की माँ ने बताया ''वे चार हजार नगद देंगे और पन्द्रह तोला सोना। उसकी माँ पहाड़ागंज जाकर लड़की देख आयी है।........................ वे लोग दो सौ आदमियों की बारात लायेंगे और दावत में देशी घी ही लगाना पड़ेगा, दो सूट लड़के के और एक सूट बाप का तो जरूर ही होगा।''1 परमजीत के माता–पिता भी उसकी शादी में प्राप्त होने वाले दहेज का माँग–पत्र तैयार करते है ताकि कोई सामान छूट न जाए। इन सभी स्थितियों को देखते हुए भी पढ़ा–लिखा परमजीत दहेज–प्रथा का विरोध नहीं करता है। परमजीत की शादी के बाद उसकी बहन बिम्मा का दहेज उसकी शादी में आए दहेज से ही तैयार करते है। ''सिलाई मशीन, पंखा, रेडियो और टी सेट एकदम अलग रख दिये थे और बर्तनों की बाल्टी भी।''2 शादी के बाद रमा की मानसिक स्थिति इस दहेज प्रथा के कारण जकड़ी रहती है। उसे पता है कि मेरी शादी में कितना दहेज दिया गया। जब परमजीत पड़ौसी से रमा की लड़ाई पर

———————————

कहता है कि फालतू लड़ाई–झगड़े में समय व्यतीत न कर एक स्वेटर माँ के लिए बुन दो। तो रमा का विरोधी स्वर मुखर हो उठता है वह कहती है ''क्यों, पहले क्या कम दिया है जो अब और दूँ ! मेरी माँ ने महीनों लगाकर दहेज तैयार की थी, पचासों चक्कर करोलबाग के लगाये थे, तुम्हारी माँ ने एक हाथ से सब–कुछ उठाकर बेटी को थमा दिया। वह तो मैंने उतारे होते, तो गहनों के एक–दो सेट भी दे डालती। मैं कुछ नहीं बुनने वाली।''3

परिवार में लड़की की शादी हो तो दहेज देना एवं लड़के की शादी हो तो दहेज लेकर आना, यह एक परम्परा बन चुकी है। जबकि इस घातक परम्परा का विरोध साहित्यिक रूप में भी करना चाहिए। इससे कई बहुओं की जान तक जा चुकी है। दहेज एक राक्षस है जो इंसान को इंसान नहीं समझने देता है। शादी में बिम्मों के ससुराल वाले दहेज एवं दो हजार नकद और उसके अतिरिक्त बाग्दान हेतु बहुमूल्य वस्तुएँ भी माँगते है। एक लिस्ट बनाकर देने में भी इनकी कोई हिचकिचाहट दिखाई नहीं देती है। इसी उपन्यास में एक स्थान पर मकान मालकीन केकी ने परमजीत से कहा पंजाबी समुदाय में दहेज प्रथा व्याप्त है। वह अपने पिता के प्रति तिरस्कार की नजर रखती है क्योंकि ''बाप के पास जो पैसा था वह उस कमीनी बहन की शादी में लग गया। मुझे कभी–कभी अपने बाप पर बड़ा गुस्सा आता है। उसने मेरे बारे में कुछ नहीं सोचा, सारा उसकी बेहूदी जरूरतें पूरी करने में लगा दिया।''4

ममता कालिया ने 'आलमारी' कहानी में भी दहेज प्रथा के प्रति विचार प्रकट करते हुए बताया कि किस प्रकार एक लड़की के माता–पिता दहेज का प्रबंध करते है, चाहे इसके लिए कुछ भी करना पड़े। कहानी में बताया कि ''गाय–बछड़ा बेचकर; घड़ी, साइकिल, ट्रांजिस्टर तो खरीद लिए हैं, गुरूजी, पर आलमारी नहीं आयी है। हलकी से हलकी आलमारी भी पाँच सौ की है। लड़के वालों की लिस्ट में आलमारी सबसे ऊपर लिखी है।''5 एक लड़की के माता–पिता की मानसिक स्थिति का बखान है यह कहानी। इस स्थिति को देखते हुए यही

———————————

लगता है कि दहेज कितना भी दो ससुराल वालों की मांगें कभी पूरी नहीं की जा सकती है। ससुराल वालों की माँग पूरी करते–करते लड़की के माता–पिता पर माँगने तक की नौबत आ जाती है और माँग पूरी नहीं होने पर तलाक देने, घर से बाहर निकालने या केरोसीन डालकर जलाने तक की स्थिति बना देते है, ससुराल वाले!

समाज का विकास व्यक्ति से एवं व्यक्ति का विकास आजाद रहने से होता है। ''जिस तरह इंसान मुल्क की आज़ादी के लिए लड़ता है, उसी तरह उसे अपनी निजी आज़ादी के लिए लड़ना पड़ता है। जिस कीमत पर आज़ादी मिलती है, उसी कीमत पर उसकी कद्र भी

करनी पड़ती है।''6 समाज और आजादी का संबंध सदियों से चला आ रहा है। जब ''वितस्ता को पीड़ा हुई, 'तुम खुद लेखक हो विवेक, तुम्हीं सोचो जेल की दीवारों में कहीं प्रेम पनप सकता है। प्रेम के लिए खुली हवा, उन्मुक्त साँस, निर्बाध गति और हलका मन भी होना ज़रूरी है।''7 लेखिका ने इसमें कहा कि प्रेम स्वतंत्र रहकर ही किया जा सकता है।

पुलिस विभाग द्वारा कई बार चोर को पकड़ लिया जाता है। ''चोर और पुलिस में छत्तीस का रिश्ता इस कदर था कि पुलिस चोर को पकड़ने में कम ही कामयाब होती। चोर हमेशा चौकन्ना साबित होता। कई बार माल की औनी–पौनी बरामदगी हो जाती, पर चोर के नाम का तब भी खुलासा न होता।''8 ''धीरे–धीरे अख़बार से भी मन उचट गया। सिर कुर्सी की बैक पर टिकाए वह आस–पास के मकानों की ओर ताकती रहती।''9 आत्मीया का अकेलापन उसके लिए दुःखद हो रहा था। वह जानती थी की ''बस इस बार पाँच पर आकर आत्मीया के गले में कुछ अटक जाता है। उसे दिन–ब–दिन लगता है, पाँच के बाद वह जिन्दगी जीती नहीं, बिताती है। पाँच बजे के बाद वह कुछ नहीं बचती। उसके व्यक्तित्व के पास रोज सिर्फ सात घण्टे जीने को हैं– दस से पाँच। दफ्तर के अलग वह कुछ नहीं है, फाइलों के अलावा उसके दस्तखत का मूल्य नहीं है, इस लाल इमारत के बाहर वह सड़क पर चलती महज एक
——————————————

परछाई है जो किसी की भी हो सकती है। अफसरी से हट कर अलग कोई पार्ट अदा नहीं करना। रोज सात घंटों का वजीर बनाया जाता है और शेष सत्रह घंटे वह 'न कुछता' के बोझ से दब जाती है।''10 अतः अकेलापन का अर्थ वह समझ चुकी थी। ''जो अकेला रहता है, उसे मन बहलाने के साधन स्वयं जुटाने पड़ते है।''11

लेखिका ने अपने कथा साहित्य में कहा है कि ''यों तो मनुष्य भी शाकाहार में आता है। दंगों में बड़े–बड़े शाकाहारी ऐसी मारकाट मचाते है कि कितने मरे, कितने घायल हुए, यह सिर्फ अखबार से पता चलता है।''12 अर्थात मनुष्य जब दंगाई बन जाता है तो वह हिंसक हो जाता है। बेरोजगारी जिन्दगी का अभिशाप है। जो व्यक्ति बेरोजगार होता है वही जान पाता है कि बेरोजगारी क्या होती है। ''राजकुमार को बेकारी का पांच साल का अनुभव था। उसके शब्दों में अब वह एम.ए. तक पढ़ा–लिखा सब भूल चुका था। विपिन चार साल से नौकरी की तलाश में लगा था और इस सिलसिले में बैंक में चपरासी पद तक के लिए अर्जी दे चुका था। अंशुमान ने कंपटीशन के इम्तहानों में बैठ–बैठ कर आँखें सुजा ली थीं और वह अपने लिए कहा करता था, 'अब तो मैं अस्त हुआ। हौसला पस्त हुआ।' ये सब अपने को बेरोजगार विशेषज्ञ कहते थे।''13 'लड़के' कहानी में बेराजगार लड़को के बारे में कहा गया कि ''हलचल के नाम पर उनके पास था ही क्या? अखबार की दी हुई खबरें, सरकार की दी हुई बेरोजगारी और परिवार की दी हुई परेशानियाँ।''14 जिससे ज्ञात होता है कि शिक्षित व्यक्ति जब तक रोजगार नहीं पा जाता तब तक वह बेरोजगार, परिवार पर बोझ की बना रहेगा, यहाँ तक की उसकी शादी होने तक में बाधा उत्पन्न होती रहती है।

सामाजिक यथार्थ के रूप में सम्पूर्ण सामाजिक संस्थाओं में परिवार ही वह मूलभूत सामाजिक व्यवस्था है, यही वह कड़ी है जो व्यक्ति का संबंध समाज से जोड़ता है। व्यक्ति को ——————————————

सामाजिक बनाने में परिवार का स्वरूप प्रायः संयुक्त हुआ करता था। संयुक्त परिवार वह है जहाँ रक्त संबंध से कुछ जुड़े परिवार सम्मिलित रूप से रहते हों तथा खान–पान और आर्थिक हितों की दृष्टि से वे सम्मिलित रूप से व्यवहार करते हो। एक अर्से तक जो संयुक्त परिवार अपनी एकता के लिए विख्यात था उसमें आज बिखराव और टूटन परिलक्षित होता है। संयुक्त परिवारों के स्थान पर आज व्यक्ति छोटे–छोटे परिवारों में ही सुख खोज रहा है। संयुक्त परिवार की बदली हुई संरचना का यथार्थ बोध के स्तर पर विद्यमान है। 'उड़ान' कहानी का नायक साकी अपने पिता को कहता है कि – ''पापा आपके जमाने में ईमानदारी बहुत बड़ा गुण माना जाता था, मेरे जमाने में समझदारी इससे बड़ा गुण है। और तो और वफादारी, ईमानदारी अब इन्सानों की नहीं, कुत्तों की खासियतें है और मैं किसी कम्पनी का वफादार कुत्ता कहलाना पसंद नहीं करूंगा।''15 यह कहकर नायक पिता को छोड़कर चला जाता है, एक नये एकाकी परिवार को बसाने। 'दुक्खम–सुक्खम' उपन्यास में तीन पीढ़ियों के वैचारिक अंतराल से उत्पन्न हुई पारिवारिक समस्याओं को ममता जी ने दर्शाया है। हर एक विवाहित स्त्री अपने बच्चों को प्यार करती है। आजकल के जमाने और पुराने जमाने के बारे में तुलना करके देखने से हमको यह पता चलता है कि आजकल माँ–बाप, बच्चे और पति–पत्नी के बीच प्यार कम होता जा रहा है। एक ही साथ रहकर भी यांत्रिक जीवन बिता रहे है।

इक्कीसवीं सदी के पदार्पण के साथ ही संयुक्त परिवार का बिखराव शुरू हो गया। कहानी 'परदेसी' में कनाडा का रिचर्ड भारत में एक परिवार में आकर रहता है। वह यहाँ के इस संयुक्त परिवार के साथ रहता है तब वह कहता है ''जिन्हें आप गड़बड़ियाँ कह रही हैं, उनके लिए हमारे देश में तरसते हैं लोग। कहां मिलती घर–परिवार की गर्मी। मुझे देखिये, बारह साल की उम्र से अकेला हूँ। मां–बाप का तलाक हो गया। पहले माँ के साथ रहा। दो साल बाद उसने दूसरी शादी कर ली। फिर पिता के साथ रहा, उसके साल भर बाद पिता ने भी दूसरी शादी कर ली, मेरे लिए कहीं जगह नहीं बची थी।''16 कनाडा के रिचर्ड द्वारा पश्चिमी
——————————————

सभ्यता की यथार्थता को दिखाया गया और भारतीय संस्कृति का समर्थन किया गया है। रिचर्ड को समय–समय पर लगता है कि संयुक्त परिवार में ही यहाँ की संस्कृति की छाप दिखाई पड़ती है। जब वह इनके साथ खाना खाने लगता है तब वह कहता है ''आपके घर में अभी डिनर के समय तीन पीढ़ियां एक साथ खाना खा रही थी। अरे, दुर्लभ सुख है यह। ऐसा दृश्य देखे मुझे बरसों हो गये कि बच्चों के मां–बाप अपने मां–बाप के सामने आज्ञाकारी बच्चे बन जायें।''17 भारतीय संस्कृति की यथार्थता को रिचर्ड ने प्रकट किया है। संयुक्त परिवार मुख्यतः ग्रामीण परिवेश की पहचान थी।

एकल परिवार एक ऐसी धारणा है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति अपना विकास देखता है न कि परिवार का। उसे लगता है कि उसके अलग होने से उसका विकास हो रहा है। एकल परिवार में ''उसके दोनों लड़के अपनी बीवियों और नौकरियों में मशगूल थे, उन्हे कभी खयाल ही नहीं आया कि उनके माँ–बाप अपना वक्त कैसे काटते होंगे। कभी उन्हें ज्यादा लिखते कि उनकी याद आ रही है, तो वे एक मनीऑर्डर भेज देते। उनकी बीवियां कभी उसे चिट्ठी नहीं लिखतीं मानो वह उनकी कुछ लगती ही नहीं।''18 –एकल परिवार की धारणा के मौजूद होने पर बुजुर्ग दम्पत्ति अपना किस प्रकार समय व्यतित कर रहे हैं उसको दर्शाया गया है। लेकिन जब बुजुर्ग दम्पति की जीवन बीमा पॉलिसी परिपक्व होती है और व्यक्ति कहता है कि ये तो दोनों बेटों में बाँट देनी चाहिए। तो उसकी पत्नी कहती है ''तुम तो ऐसे ही बच्चों के लिए करते–करते मर–खप जाओगे, मैं कहां जाऊंगी। ये तुम्हारी बहुए मुझे एक पंखा और दरी हाथ में देकर न निकाल बाहर करें तो मेरा नाम बदल देना।''19 पारिवारिक यथार्थ को दर्शाता एवं वृद्ध एकाकी माता–पिता की संवेदना को प्रकट करता है।

परिवारिक यथार्थ को प्रकट करती कहानी 'समय' में ''पड़ोसी बताते है, 'मिसेज जोशी जानबूझ कर यहाँ पड़ी हुई है। इनका एक बेटा दुबई में पढ़ता है, दूसरा इग्लैण्ड में। जोशी साब बारी–बारी से दोनों के पास जाते रहते है। अनभिज्ञ जनों को ताज्जुब होता कि ––––––––––––––––––––

पति–पत्नी इस आयु में अलग–अलग क्यों रहते है।''20 व्यक्ति अपनी लालसाओं से अपने बच्चों को उच्च शिक्षा प्रदान करवाता है, परन्तु उच्च शिक्षा के उपरान्त वह नौकरी भी बाहर ही करता है। उस समय माता–पिता एकाकी हो जाते है और उन्हें नीरस जीवन जीने को बाध्य होना पड़ता है। ''इसको भी ले जाओगे तो हम दोनों बिल्कुल अकेले रह जाएँगे। वैसे ही यह सीनियर सिटिजन कॉलोनी बनती जा रही है। सबके बच्चे पढ़–लिखकर बाहर चले जा रहे हैं। हर घर में, समझो एक बुढ़ा, एक बुढ़ी, एक कुत्ता और एक कार बस यही रह गया।''21 परिवार अब एकल परिवार बन गया है। इसमें बुजुर्ग दम्पति अपने पुत्रों के विदेश प्रवास से अकेलेपन का शिकर है।

इक्कीसवीं सदी में एक नया ही रिश्ता पनप रहा है, वह है लिव–इन–रिलेशनशिप का। यह पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का द्योतक है। इसमें लड़का और लड़की बगैर किसी सामाजिक बंधन के एक साथ रहते है। कहानी 'बीमारी' में ''उसके चेहरे की बेफिक्री मुझे नापसंद थी। उसे बेफिक्र होने का कोई हक नहीं था। अभी तो पहली पत्नी से प्रबोध का तलाक भी नहीं मिला था और फिर प्रबोध को दूसरी शादी की कोई जल्दी भी नहीं थी। मेरी समझ में लड़की को चिंतित होने के लिए यह पर्याप्त कारण था।''22 प्रबोध का अपनी पत्नी के साथ संबंध विच्छेद भी नहीं हुआ और वह किसी दूसरी लड़की के साथ लिव–इन–रिलेशनशिप के तहत रह रहा था, तो नायिका को यह बात अखर रही थी।

'दौड़' उपन्यास में पवन की माँ रेखा जब अहमदाबाद पवन के पास आती है तो उसे पता चलता है कि पवन स्टैला के साथ रह रहा है, बगैर शादी के। पवन स्टैला का परिचय कराता है ''माँ स्टैला मेरी बिजनेस पार्टनर, लाइफ पार्टनर, रूम पार्टनर तीनों है।''23 माँ और पुत्र में संवाद होने पर पवन कहता है ''तुमने देखा क्या है माँ ? इलाहाबाद से निकलोगी तो देखोगी न। यहाँ गुजरात, सौराष्ट्र में शादी तय हो जाने के बाद लड़की महीने भर ससुराल में ––––––––––––––––––––

रहती है। लड़का–लड़की एक–दूसरे के तौर–तरीके समझने के बाद ही शादी करते है।''24 अर्थात आज की इस सदी में लिव–इन–रिलेशनशिप रिश्ते द्वारा भी साथ में रहा जा सकता है।

लेखिका अपने कथा साहित्य द्वारा सामाजिक यथार्थ के रूप में विवाह संस्था का वर्तमान स्वरूप तथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था के नीति नियमों को खंगालती है। 'बेघर' उपन्यास में परमजीत के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज में पुरुषों की मनोवृत्ति को सीधा खोलकर रख दिया है। जहाँ विवाह के लिए यौन सुचिता अनिवार्य है। ममता कालिया अपने कथा साहित्य में पितृसत्तात्मक व्यवस्था एवं पुरुष मानसिकता पर प्रश्न चिह्न लगाती है। लेखिका के स्त्री पात्रों में विवाह एवं परिवार संस्था की जकड़बन्दी से बाहर आने की अकुलाहट है, जिसके कारण वह विभिन्न रास्ते अपनाती है यथा अविवाहित रहना, लिव इन रिलेशन, प्रेम विवाह इत्यादि। स्त्री स्वतंत्रता की चाह ने स्त्री को विवाह संस्था से बाहर अकेले रहने की प्रेरणा दी है। विवाह संस्था के अन्दर विषम और क्रुर होते संबंधों ने स्त्री को विवाह के बाहर प्रेम आधारित रिश्तों की ओर आकृष्ट किया है। लेखिका विवाह के पारम्परिक कर्मकाण्डों को कटघरे में खड़ा करती है तथा दाम्पत्य संबंधों और परिवार में पत्नी की गौण की स्थिति का विश्लेषण करती है।

आधुनिक समय में ''क्यों छोटी यह वैवाहिक विज्ञापन तूने दिया है क्या?..... पर ब्योरे तो सब तुझसे मिलते हैं। पैंतीस साल की सुन्दर प्राध्यापिका दिल्ली कार्यरत वर जाति बन्धन नहीं। ई मेल पता भी तेरा ही है।''25 विवाह के लिए विज्ञापन देना आम बात हो गई।

विज्ञापन चाहे अखबार में हो या पत्रिका या वेबसाइट पर। ''कुछ हफ्ते उसने शादी डाट कॉम पर अपना बायोडेटा डाला। एक भी प्रस्ताव न आने पर वह परेशान हो गई। उसे लगा वह जिन्दगी में ऐसे बस स्टॉप पर खड़ी है जहाँ अब बसें नहीं आतीं। टाइम्स के विज्ञापन उसके भग्न हृदय की हताश हुँकार थीं।''26 विवाह के लिए इंटरनेट पर वेबसाइट शादी डाट कॉम में भी विज्ञापन दिया परन्तु परिणाम प्राप्त नहीं हुआ। अतः अब अकेलेपन में जीवन गुजारना है। ——————————————

''जब सूनी वाकई सूनी रह गई थी, उसने पाया एक–एक कर उसके सारे कुलीग शादी कर चुके थे।''27 जब जीवन में अकेलेपन की तस्वीर साफ दिखाई देती है तब ''बिस्तर पर कॉक्रोच देखकर–'एक क्षण सूनी को हँसी आई। उसके बिस्तर का यही हश्र होना था। एक अकेला बिस्तर, एक अकेला तकिया, एक अकेला कंबल कितना मनहूस होता है। क्यों जी, क्या सुहागरात मनाने आए हो तुम ? मन ही मन सूनी ने कहा। फिर बिस्तर देखते–देखते रूलाई आ गई।''28 अब उसके जीवन का जो भी साथी बनता है बन्दर, गिलहरी या कॉक्रोच, इनसे अब अलग हट कर जीवन उससे सोचा ही नहीं गया। जब गिलहरी से दोस्ती हुई ''सहेलियों के मजाक करने पर सूनी ने स्वयं कट्टो को नया नाम दे दिया था– जीवनसाथी। शादी और परिवार से अघाई अधेड़ लेक्चरर कहती है ''यह तुमने अच्छा जीवन साथी ढूंढ निकाला, न कोई झंझट न कोई बन्धन।''29 –विवाह प्रथा पर कथन, यथार्थ को प्रकट करता है। जीवन साथी के साथ तो झंझट और बंधन होता है परन्तु इन छोटे प्राणियों से उसको कोई खतरा नहीं था।

जब लड़का शादी के लायक नहीं होता है तब तक उसका नाम उपनाम ही रहता है। जैसे ही उसको नौकरी लगती है, उसके लिए रिश्ते भी बढ़िया आते है और बातचीत से पता चलता है कि दहेज भी ज्यादा मिलेगा। ''दो–चार जहीन लड़के नौकरी पर लग गए, उनका स्कूली नाम जड़ पकड़ गया। शादी–मण्डी में उनकी किमत थोड़ी और बढ़ गई।''30 अब लड़कियों के लिए ''उनका ख़याल था सना का रिश्ता किसी शाही ख़ानदान में होगा।''31 माता–पिता का विवाह के बारे में सोचना जायज है कि रिश्ता उच्च कूल में हो।

विवाह के पहले जब ''हम मीलों मील पैदल चलते; एकान्त ढूँढने के चक्कर में पार्कों और मक़बरों में मँडराते और आख़िर किसी सिनेमाघर की पिछली सीट में पनाह पाते। आदिल हर रोज़ इसरार करता कि मैं रात भर को ठहर जाऊँ। मैं हर रोज़ उसका दिल तोड़ती। ——————————————

मुस्लिम समाज में विवाह पर मेहर की राशि तय होती है और उसके बाद यदि तलाक कि स्थिति बनती है तब मेहर की राशि चुकानी पड़ती है। ''यानी मेहर शादी के मौके पर नहीं, तलाक के मौके पर दिया जाने वाला तोहफा है।''32

लेखिका अपने घर में रहने वाली आफशाँ को यह कह कर शादी के परिणाम को समझाती है। ''डर ऐसी चीज़ है जो सोचने पर ही लगता है। फिर तुमने यह कैसे सोचा कि शादी कर लेने से हिफाज़त का इंतज़ाम भी हो जाता है।''33 विवाहोपरान्त भी लड़कियाँ सुरक्षित नहीं हो सकती है।

कहानी 'कामयाब' में एक विधायक की पत्नी होते हुए भी जब उसको काम करना पड़ता है तो वह कहती ''मुफ्त की नानबाई मिली हुई है इन्हें। खुद दुनिया जहान में घूमें, हमें बेटियों की आया बनाकर डाल दिया है।''34 स्वतंत्रता सभी को मिली परन्तु वर्तमान समय तक स्त्रियों को आजादी नहीं मिली है। यह एक दुःखद स्थिति बनी हुई है।

लेखिका ने अपने कथा सहित्य में महिलाओं के लिए स्व–निर्णय लेने हेतु उत्साहित किया है। कहानी 'सीमा' में सीमा को पति उसके पति ने कहा ''तुम्हारी ऊल जलूल दार्शनिकता से बच्चों का लालन–पालन नहीं किया जा सकता। उसे पढ़–लिखकर किसी अच्छे घर जाना है। तब सीमा ने मन ही मन मुँह बिचकाया–'क्या होता है अच्छा घर ? एक घटनाविहीन दुर्घटनास्थल जहाँ पत्नी की शक्ल में पुतली बनायी जाती है। हर गतिविधि की डोर पति के हाथ, पत्नी को सिर्फ आभास देना है कि वह हिल–डुल और बोल रही है।' सीमा ने जोर से कहा–'पर उससे पहले इसे अपनी गलतियाँ आप करनी है, इसे अपने फैसले खुद लेने हैं। इसे कोई मलाल न रह जाये।''35 पति सुभाष के द्वारा प्रताड़ित पत्नी सीमा ने उक्त कथन द्वारा अपनी लड़की बिल्ली के लिए भविष्य की संकल्पना प्रस्तुत की है।

रेखा को यह अखरता है तब राकेश बहू का पक्ष लेते हुए उक्त कथन कह कर अपनी बहू का समर्थन करता है।

——————————————

ममता कालिया : बेघर, पृ. 115

वही, पृ. 122

ममता कालिया : बेघर, पृ. 124

वही, पृ. 95

ममता कालिया : 21 श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ. 98

ममता कालिया : तीन लघु उपल्यास(लड़कियाँ), पृ. 99

ममता कालिया : थोड़ा सा प्रगतिशील, पृ. 81

ममता कालिया : खुशकिस्मत, पृ. 40

ममता कालिया : छुटकारा, पृ. 62

ममता कालिया : छुटकारा, पृ. 62–63

वही, पृ. 76

ममता कालिया : मुखौटा, पृ. 10

ममता कालिया : जाँच अभी जारी है, पृ. 83

ममता कालिया : खुशकिस्मत, पृ. 90

ममता कालिया : निर्मोही, पृ. 100

ममता कालिया : खुशकिस्मत, पृ. 81

ममता कालिया : खुशकिस्मत, पृ. 82

ममता कालिया : 21 श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ. 129

वही, पृ. 130

ममता कालिया : निर्मोही, पृ. 104

ममता कालिया : दौड़, पृ. 40

ममता कालिया : छुटकारा, पृ. 39

ममता कालिया : दौड़, पृ. 51

ममता कालिया : दौड़, पृ. 52

ममता कालिया : खुशकिस्मत, पृ. 31

वही, पृ. 32

ममता कालिया : खुशकिस्मत, पृ. 51

वही, पृ. 52

वही, पृ. 129

वही, पृ. 96

ममता कालिया : थोड़ा सा प्रगतिशील, पृ. 30

ममता कालिया : तीन लघु उपन्यास(लड़कियाँ), पृ. 97

वही, पृ. 99

ममता कालिया : थोड़ा सा प्रगतिशील, पृ. 28

ममता कालिया : मुखौटा, पृ. 72